Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

भारत में मलिन बस्तियों के दुष्प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

भारत में मलिन बस्तियों के दुष्प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन

Dr. Vijay Kumar Verma*

Lecturer, Department of Geography, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश:- *प्रस्तुत शोध पत्र भारत में मलिन बस्तियों के दुष्प्रभावों के भौगोलिक अध्ययन से सम्बंधित है। भारत विश्व के सबसे विशालतम देशों में से एक है। यह अपने आप में एक अजूबा है। जहां एक तरफ उत्तर में हिमालयी क्षेत्र में अत्याधिक बर्फबारी होती है। वहीं मैदानी इलाकों में तापमान काफी गर्म होता है। जबकि समुद्री इलाकों में तापमान काफी हद तक एक समान रहता है। एक देश के अन्दर इतनी सारी अलग-अलग जलवायु विविधता अपने आप में अदभुत हैं। जहाँ तक भारत जैसे विकासशील देश का प्रश्न है, गंदी बस्ती की समस्या यहां अत्यधिक गंभीर है। लोगों को बुरी आर्थिक दशा के कारण यह बढ़ती हुई जनसंख्या, उन्नत तकनीकी और धीमी प्रगति से होने वाले औधोगिकीकरण का ही परिणाम है। भारत में गंदी बस्ती का उदय कब हुआ, इसका निश्चित समय नहीं बतलाया जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बिताता जा रहा है नई-नई गंदी बस्तीयों का विस्तार हो रहा है। इस प्रकार गन्दी बस्तियाँ प्रायः सभी बड़े नगरों में विकसित हुई है। नगरीकरण और औधोगिकीकरण ने जहां व्यक्तियों को विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, शिक्षा और एक अच्छी वैज्ञानिक समझ दी है वहीं करोड़ों व्यक्तियों को नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया है। इस नारकीय जीवन को गंदी बस्तियों में देखा जा सकता है। एक छोटी-सी झोपड़ी, कच्चे मकान अथवा एक कोठरी में 10 से 15 व्यक्ति तक रहते हैं। जल निकासी का कोई प्रबंध नहीं होता। कूड़े, कचरे का यहां ढेर लगा रहता है। शौच की कोई व्यवस्था नहीं होती। बैठने के लिए इनके पास खुला स्थान नहीं है। तंग संकरी मलिन बस्तियाँ जहां जीवन कम और बीमारियां अधिक हैं। ये वे स्थान हैं जहां सामाजिक आदर्श, मुल्य, नैतिकता, सहिष्णुता आदि के दर्शन होते हैं। ये अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं अतः उपरोक्त शोध पत्र में भारत की मलिन बस्तियों की प्रमुख समस्याओं, दुष्परिणाम, समाधान के उपायों एवं स्वच्छ बेहतर जीवन स्तर के उपायों का अध्ययन किया गया है।*

शब्द कुँजी:- *भारत में गन्दी बस्तियों का अध्ययन, गन्दी बस्तियों के कारण, निर्धनता, नगरीय आवास की समस्या, जनसँख्या दबाव, औद्योगिक क्रांति, शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव, शोषण की प्रवृत्ति, ग्रामीण बेरोजगारी, नगर नियोजन का अभाव, दुष्परिणाम, गन्दी बस्तियों की समस्याओं के समाधान की योजनाएं।*

----------X----------

परिचय

मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएं हैं -भोजन, वस्त्र और आवास। पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र तथा साफ-सुथरा आवास मानव की कार्यक्षमता एवं जीवन को सुचारू रूप से सक्रिय रखने के लिए न्यूनतम एवं वांछनीय आवश्यकताएं हैं। वर्तमान युग में मशीनीकरण का युग है। औधोगिकीकरण के जिनते भी आयाम है, सब मशीन पर निर्भर हैं, लेकिन इन मशीनों की कार्यक्षमता को बनाये रखने अथवा अनुकूल दशाओं के विकास के लिए श्रमिकों का संतुलित एवं पौष्टिक आहार शरीर ढूंढनें को पर्याप्त मात्रा वस्त्र और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्यकर आवास की उपलब्धि नितान्त आवशयक है। लेकिन औद्योगिक प्रगति के बाद आज श्रमिकों के आवास की व्यवस्था अच्छी नहीं है। उन्हें गंदी बस्तियों में ही रहना पडत है। अतः वत्तमान युग में गंदी बस्तियों की समस्या बनती जा रही है ।इसी कारण हाउस ने नगर को "जीवन और समस्याओं का विशिष्ट केंद्र" माना है।

जहाँ तक भारत जैसे विकासशील देश का प्रश्न है, गंदी बस्ती की समस्या यहां अत्यधिक गंभीर है। लोगों को बुरी आर्थिक दशा के कारण यह बढ़ती हुई जनसंख्या, उन्नत तकनीकी और धीमी प्रगति से होने वाले औधोगिकीकरण का ही परिणाम है। भारत में गंदी बस्ती का उदय कब हुआ, इसका निश्चित समय नहीं बतलाया जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बिताता जा रहा

www.ignited.in

है नई-नई गंदी बस्तीयों का विस्तार हो रहा है। इस प्रकार गन्दी बस्तियाँ प्रायः सभी बड़े नगरों में विकसित हुई है।

दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ गन्दी बस्ती की समस्या का निराकरण कर दिया गया हो। यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस आर्थिक और तकनीकी रूप में उन्नत देश हैं, फिर ही सस्ते और स्वस्थ आवास व्यवस्था की समस्या विभिन्न उपायों को अपनाकर भी नहीं सुलझाया जा सका है। 19वीं एवं 20 वीं शताब्दी में विज्ञान, उद्योग और शिक्षा में अत्यधिक वृद्धि हुई। चिकित्सा विज्ञान ने व्यक्ति को दीर्घायु बनाया है। पिछले 100 वर्षों में संसार की जनसंख्या दुगुनी हो गयी है। भारत में जनसंख्या में भी तीव्र गति से वृद्धि हुई है। पिछले 10 वर्षों की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 2011 में 121 करोड़ हो गई। ग्रामीण जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है किन्तु अत्यधिक निर्धनता के कारण ग्रामीण निवासी बहुत बड़ी तादाद में नगरों में काम की तलाश में आ रहे हैं। इससे नगरों में आवास की समस्या उत्पन्न हुई है। औद्योगिक नगरों में जनसंख्या का दबाव अत्यधिक बढ़ गया है। मलिन एवं गंदी बस्तियाँ मूलतः औद्योगिकनगरों एवं महानगरों की उपज है। यहां व्यक्तियों को छोटा बड़ा काम मिल जाता है पर रहने को घर नहीं मिलता। इसलिए इन महानगरों को मलिन बस्तियों में शरण मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र:

भारत विश्व के सबसे विशालतम देशों में से एक है। भारत का अक्षांशीय विस्तार 08 डिग्री 04 मिनट से 37 डिग्री 06 मिनट उत्तर एवं 68 डिग्री 07 मिनट से 97 डिग्री 25 मिनट पूर्वी देशान्तर है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर उत्तर (जम्मू-कश्मीर) से दक्षिण (कन्याकुमारी) तक भारत की कुल लम्बाई 3,214 किलोमीटर है जबकि पूर्व (अरूणाचल प्रदेश) से पश्चिम (गुजरात) तक भारत की चैड़ाई 2,922 किलोमीटर है। भारत की कुल स्थलीय सीमा (Land Frontier) 15,200 किलोमीटर है जबकि समुद्री सीमा 7,516 किलोमीटर है। यह अपने आप में एक अजूबा है। जहां एक तरफ उत्तर में हिमालयी क्षेत्र में अत्याधिक बर्फबारी होती है। वहीं मैदानी इलाकों में तापमान काफी गर्म होता है। जबकि समुद्री इलाकों में तापमान काफी हद तक एक समान रहता है। एक देश के अन्दर इतनी सारी अलग-अलग जलवायु विविधता अपने आप में अदभुत हैं।

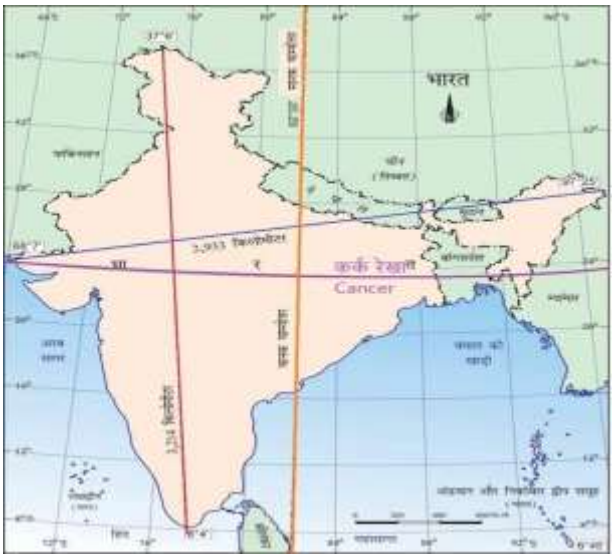

अध्ययन के उद्देश्य:-

आवास की समस्या ने नयी गंदी बस्तियों के स्थापित होने में सहायता की है। असंख्य जर्जर मकानों में असंख्य निर्धन व्यक्ति रहने लगे हैं जिनने गंदी बस्ती का रूप धारण कर लिया है। इस तरह नयी गंदी बस्तियाँ स्थापित होती जा रही हैं और पुरानी गंदी बस्तियों के निर्धन इसलिए नहीं छोड़ते कि इससे सस्ता घर नगर में कहीं उपलब्ध नहीं होता है। एशिया और दक्षिणी अफ्रीका की स्थिति तो यह है कि गंदी बस्तियों के घर व्यक्ति उन चीजों से बनाता है जिसे लोग कूड़ा-कचरा समझकर फेंक देते हैं। भरते में ऐसी गंदी बस्तियों की उत्पत्ती के लिए कोई निश्चित पर्यावरण निर्धारित करना कठिन है। यह कहीं भी विकसित हो सकती है। फिलिपाइन्स में दलदली क्षेत्रों में, छोटे-छोटे पहाड़ी क्षेत्रों में और युद्ध में जो नष्ट हो गए थे वहां गंदी बस्तियाँ स्थापित हो गयी हैं ।लैटिन अमेरिका में छोटे-छोटे पहाड़ों की ढलानों पर गंदी बस्तियाँ हैं। कराँची में कब्रिस्तान और सड़क के किनारे इन्हें देखा जा सकता है ।भारत में भी इसे इस रूप में देखा जा सकता है ।अहमदाबाद, कानपुर, नागपुर, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में एक कमरे की अंधेरी कोठरियों की गंदी बस्तियों की संख्या अधिक है। इस लघु शोध का उद्देश्य भारत में गंदी बस्तियों का मानव स्वास्थ्य पर में प्रभावों का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. भारत के शहरों में गंदी बस्तियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया।
2. भारत में बस्तीवासियों के पर्यावरण का मुल्यांकन किया गया है।
3. भारत में बस्तीवासियों की समस्याओं का आकलन किया गया है।

परिकल्पना:-

1. गन्दी बस्तियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं।
2. भारत में गन्दी बस्तियों में रोग अधिक फैलते हैं।
3. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के साथ साथ गन्दी बस्तियों का प्रसार भी होता है।

अध्ययन पद्धति:-

अध्ययन पद्धति के रूप में प्राथमिक आकड़ो का संग्रह चिकित्सा स्वास्थ्य विभाग, समाजकल्याण विभाग, मौसम विभाग एवं राजकीय तथा निजी चिकित्सा सेवा केंद्रों के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आकड़ो जैसे पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र, सरकारी अभिलेख, मीडिया व टेलीविजन न्यूज़ चैनल के साक्षात्कार आदि का प्रयोग किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन:

गंदी बस्तियों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों, समाज सुधारकों तथा राजनीतिज्ञ प्रायः चिंतित रहे हैं, किन्तु शोध कार्य इस क्षेत्र में बहुत विलम्ब से प्रारंभ हुआ जबकि गंदी बस्तियों के निर्माण का क्षेत्र बढ़ते हुए औद्योगीकरण को दिया जा सकता हैं। जितनी तेजी के साथ गंदी बस्तियों का निर्माण हुआ हैं उतनी ही गति से इस क्षेत्र में शोध कार्य नहीं किए गए हैं:-

गंदी बस्तियों के सम्बन्ध में किए गये अध्ययन गंदी बस्तियों से आशय क्या हों, उसका मापदंड क्या हो इस संबंध में पर्याप्त सैद्वांतिक मतभेद उभरते रहे है। कुछ एक तुलनात्मक अध्ययन गंदी बस्तियों और स्वच्छ बस्तियों को लेकर किए गए है किन्तु ये तुलनात्मक अध्ययन व्यक्तियों के रहवास और रहन-सहन के स्तर को लेकर किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि एक सीधी व सरल परिभाषा प्रतिपादित करना सरल नहीं है। भारत के संदर्भ में गंदी बस्तियों को लेकर सबसे पहले अध्ययन बंबई म्यूनिसिपल कापोर्रेशन के एक सर्वेक्षण द्वारा 1956-57 में किया गया। सबसे पहला प्रकाशन सन 1958 में भारत सेवक समाज ने पुरानी दिल्ली में स्थित गंदी बस्तियों को लेकर किया गया था। अब्राहम (1964) ने स्वीकार किया है कि गंदी बस्तियों के संदर्भ में अधिकांश अध्ययन आवास तथा शहरीकरण को लेकर किया गया हैं। डॉ. सलूजा (1979) ने गरीबी तथा गंदी बस्तियों में रहवासियों को पर्यायवाची माना है अतः गंदी बस्तियों के रहवासियों को गरीबी रेखा की श्रेणी में रखा गया हैं। बम्बई म्यूनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा 1956-1957 में सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के अनुसार बंबई में स्थित गंदी बस्तियों का विकास राजनीति एवं जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण होता है सर्वेक्षण बम्बई की मुख्य गंदी बस्तियों कजाथीपुरा, हघस, धारवी, कोलीबाड़ा गांव, कोलाबा फोर्ट एरिया का किया गया। पंजाब यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्र के प्रोफेसर डिसूजा ने 1971 में अध्ययन क्षेत्र के रुप में चंड़ीगढ़ शहर को चुना। इस अध्ययन में लेखक ने चंड़ीगढ़ की गंदी बस्तियों के सामाजिक, आर्थिक विशेषताओं को आधार बनाकर सर्वेक्षण किया। इन गंदी बस्तियों के निवासी ज्यादातर पंजाब, उ.प्र.राजस्थान से प्रवासित जनसंख्या थी। गोयल, विनोद कुमार (1995) ने अध्ययन का विषय "गंदी बस्तियों के परिवारों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति- एक विश्लेषण रायपुर नगर का" एक लघु शोध प्रबंध है। इन्होने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में यह बताया है कि रायपुर नगर में गंदी बस्तियों की समस्या का वास्तविक उदय 1970 के पश्चात ही हुआ है अतः इस समस्या में भी एक सुखद पहलू नीति निर्माताओं के लिए यह है कि वे इस समस्या को इसके पहले कि वह बहुआयामी बने, हल कर सकते है। सिन्हा, काव्या (2007) ने अपने शोध में भारत तथा इसके विभिन्न राज्यों के सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्रों (बीबे) तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिसमें गांवों में उपलब्ध स्थिति को बहुत ही खराब बताया गया है।

भारत मे गन्दी बस्तियों का अध्ययन:-

नगरीकरण और औधोगिकीकरण ने जहां व्यक्तियों को विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, शिक्षा और एक अच्छी वैज्ञानिक समझ दी है वहीं करोड़ों व्यक्तियों को नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया है। इस नारकीय जीवन को गंदी बस्तियों में देखा

www.ignited.in

जा सकता है। एक छोटी-सी झोपड़ी, कच्चे मकान अथवा एक कोठरी में 10 से 15 व्यक्ति तक रहते हैं। जल निकासी का कोई प्रबंध नहीं होता। कूड़े, कचरे का यहां ढेर लगा रहता है। शौच की कोई व्यवस्था नहीं होती। बैठने के लिए इनके पास खुला स्थान नहीं है। तंग संकरी मलिन बस्तियाँ जहां जीवन कम और बीमारियां अधिक हैं। पीले, मुर्झाये चेहरे, चिपके गाल, उभरती हड्डियाँ, फाटे गंदे कपड़े यहां का सौंदर्य है। इन्हें पात नहीं ये कब जवान होते हैं और कब बूढ़े हो जाते हैं। कब इन्हें टी.बी. हो जाती है और कब कैंसर। ये तो मौत के मुहं में जन्म लेते हैं। इनका जिंदा रहना और मरना समाज के लिए कोई अर्थ नहीं रखता। आखिर गरीब के मरने कोई अर्थ नहीं होता है। गंदी बस्तियों में इनका जीवन नाली के कीड़ों जैसा ही है। पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कानपुर के अहाता को देखकर एक बार कहा था - "आदमी-आदमी को इस रूप में कैसे देखता है"। इस तरह गंदी बस्तियों का सीधा संबंध बढ़ती हुई जनसंख्या और आवास व्यवस्था की कमी से है जो समय के साथ और गहरी होती जा रही है।

गंदी बस्ती का सामान्य अर्थ प्रत्येक तरह की कठिनाईयों जैसे जर्जर आवास व्यवस्था और गंदी युक्त पर्यावरण तथा वातावरण से है। गंदी बस्तियों की सामान्य परिभाषा करना अत्यत्न कठिन है क्योंकि प्रत्येक देश आर्थिक स्थिति के अनुरूप ही गंदी बस्तियाँ स्थापित होती हैं। गंदी बस्तियां झोपड़ी सराय , छोटी-छोटी कोठरियां, खपडैल और बांस से बने हुए कच्चे मकान, टिन शेड से निर्मित मकान, लकड़ी की छोटे केबिन आदि से स्थापित हो जाती हैं। एक स्थान पर बस्तियों की उत्पत्ती के लिए कोई निश्चित पर्यावरण निर्धारित करना कठिन है। यह कभी भी विकसित हो सकती है। फिलिपाइन्स के दलदली क्षेत्रों में, छोटे-छोटे पहाड़ी क्षेत्रों में और युद्ध में जी स्थान नष्ट हो गए थे वहां गंदी बस्तियां स्थापित हो गई है। लैटिन अमेरिका में छोटे-छोटे पहाड़ों की ढ़लान पर गंदी बस्तियाँ हैं। करांची में कब्रिस्तान और सड़क के किनारे इन्हें देखा जा सकता है। भारत में भी इसे इस रूप में देखा जा सकता है। रवालपिंडी और दक्षिणी स्पेन में प्राचीन गुफाओं में इनके दर्शन किए जा सकते हैं। अहमदाबाद, कानपुर, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास कें एक कमरे की अंधेरी कोठिरियों का गंदी बस्तियों में संख्या अत्यधिक है ।गिस्ट और हलबर्ट 'गंदी बस्तियों को विशिष्ट क्षेत्रों का विशिष्ट स्वरूप बताते हैं, तथा क्वीन एवं थामस 'गंदी बस्तियों को और रोगग्रस्त क्षेत्रों में पर्यायवार्ची समझते हैं। गंदी बस्तीयों के स्वरुप में विविधताएँ हैं। प्रत्येक देश की गंदी बस्ती का अपना स्वरुप है किन्तु उसका पर्यावरण और रहने की दशाएं लगभग समान हैं। इसमें निवास करने वाले निर्धन, बेरोजगार और काम आय वाले व्यक्ति हैं जिनका न कोई मकान है और न मकान होने की आशा है। यह वह आवासीय अनाथालय है जहां जमीन की समस्त असुविधाएं एक साथ देखने को मिलती हैं, जहां व्यक्ति नहीं, व्यक्ति के नाम पर वे पशु की तरह जीवनयापन करते हैं। औद्योगिक क्रांति के विकास ने उधोगों का विकास किया किन्तु अपने करोड़ों श्रमिकों को रहने के लिए घर नहीं दिया। गंदी बस्तियाँ बहुत कुछ इस औद्योगिकक्रांति का परिणाम हैं।

भारत में गंदी बस्तियों की समस्याएं पाश्चात्य देशों की बस्तियों की समस्याओं से भिन्न हैं। यहां गंदी बस्ती का अर्थ गन्दगी और बीमारी से बसर कर रहे छोटे-छोटे, टूटे-फूटे माकानों में रह रहे लाखों लोगों से है, जो गरीबी रेखा के नीचे बसर कर रहे हैं, सीमांत जब समूह हैं। अंग्रेजी में इसे 'मारनल पोपुलेशन' कह सकते हैं। जो भी हो इन सब गंदी बस्तियों का जीवन प्रणाली अलग ही है। इन बस्तियों में निवास कर रहे लोग अलग हैं तथा इन लोगों का दृष्टिकोण और इनकी सामाजिक व्यवस्था समाजशास्त्रियों के अध्ययन के लिए रूचि कर विषय है।

गंदी बस्ती का विकास शहर के विकास के साथ जुड़ा हुआ है और इसके साथ तरह-तरह की समस्याएं भी उत्पन्न हुई है। यधपि नगरीकरण ने गंदी बस्तियों को जन्म दिया है और इन गंदी बस्तियों ने नई समस्याएं एवं चुनौती पैदा की है।मैक्स वेबर के अनुसार "जब-जब नगर से महानगरों का विकास होता है, तब-तब भ्रष्टाचार के नये-नये रूप भी प्रकाश में आतें हैं।"

गंदी बस्ती तथा उनके जैसी सघन मुहल्लों में संख्या भारत के नगरों से दिन-व-दिन बढ़ती जा रही है। 1969 के एक सर्वेक्षण के

अनुसार बम्बई में कुल 206 बस्तियाँ थी जिसमें कुल 6,31,000 लोग रहते थे। 1991 के जनगणना के अनुसार पटना शहर की आबादी लगभग 9.18 लाख थी ।इनमें से 3.43 लाख आबादी पटना की 68 गंदी बस्तियों में रहती थी ।यह शहर की कुल जनसंख्या का 37.3 प्रतिशत था। इन केंद्रों में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व 44-84 था।

वत्र्तमान आर्थिक स्तर पर भारत कुपोषण की समस्या को कुछ कारगर तथा उपयुक्त योजनाओं के द्वारा 50 प्रतिशत तक खत्म कर सकता है। बच्चों में समुचित पोषण मूल्य को सुनिश्चित करने के काम में महिलाएं ही महत्वपूर्ण कदम उठा सकती हैं। बच्चों तथा परिवार के पोषण के स्तर में सुधार लाने के लिए महिलाओं को पोषण संबंधी जानकारी अच्छी तरह देनी होगी जिससे वे उन्हें अपनी रोजमर्रा की आदतों में शामिल कर सकें।

गंदी बस्तियों के कारण:-

गंदी बस्तियों का जन्म अचानक ही नहीं हो गया है वरन इसकी पृष्ठभूमि में अनेक मौलिक तत्व हैं जो इनकी वृद्धि के कारण बने हैं। यह निम्नलिखित हैं:

निर्धनता:-

निर्धनता अभिशाप है। निर्धन व्यक्ति के लिएय यह भू-लोक ही नरक है। निर्धन, बेरोजगार, दैनिक वेतनभोगी श्रमिक ये सब उस वर्ग के व्यक्ति हैं जो कठोर परिश्रम करने के पश्चात भी दो समय का भोजन अपने परिवार को नहीं दे पातें हैं। परिणामतः इनके बच्चे कुपोषण का शिकार बन जाते हैं। बढ़ती महंगाई, कम आमदनी, निर्धन को उच्च पौष्टिक मूल्यों वाले भोज्य पदार्थों को खरीदने के योग्य नहीं छोड़ती है। अभावों में जीना इनकी मजबूरी है।

नगरों में आवास समस्या:-

नगरों में भूमि समिति है और मांग अत्यधिक है। भूमि का मूल्य भी यहां आकाश छूता है। सामान्य व्यक्ति भूमि क्रय करके नगर में मकान नहीं बना सकता है। नगर में किराये के मकान भी समान्य व्यक्ति नहीं ले सकता है। लाखों श्रमिकों जिसके साधन और आय सीमित हैं उसे विवश होकर गंदी बस्तियों में रहना पड़ता है। मकान कम है और रहने वाले व्यक्ति कहीं अधिक हैं और परिणामस्वरूप गंदी बस्तियों में निरन्तर वृधि होती जा रही है। स्थानाभाव के चलते संक्रमण तथा रोग व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। छोटे छोटे बच्चे अपने परिवार के साथ तंग जगह में रहते हैं। परिवार में पड़ी बीमार व्यक्तियों के साथ रहने पर संक्रामक कीटाणु उन्हें भी संक्रमण के जाल में फंसा लेता है। फलतः डायरिया, मीजल्स आदि के बाद भूख खत्म हो जाती है और शरीर निर्बल होकर कुपोषण की स्थिति में चला जाता है।

नगरीय जनसंख्या का दबाव:

बढ़ती जनसंख्या के साथ जमीन तो बढ़ी नहीं फलस्वरूप रोजगार की खोज में लोग गांव से शहरों की तरफ भाग रहे हैं ।जहां उन्हें राहत के स्थान पर तमाम तकलीफों का सामना करना पड़ता है। रहने को मकान नहीं, खाने को अच्छा खाना नहीं, शुद्ध पानी नहीं, गंदगी से भरा वातावरण तथा भीड़-भाड़, इन सबके कारण उन स्वाथ्य गिरता जाता है फलतः वे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं, जिसका प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है।

औद्योगिक क्रांति:

गंदी बस्तियों की उत्पत्ती में औद्योगिकक्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका है। औद्योगिकनगर में जीविका के अनके विकल्प उपस्थित होते हैं। लाखों की संख्या में ग्रामीण व्यक्ति यहां अधिक से अधिक धन अर्जित करने की कल्पना सजाए आता है परंतु उसे यहां निराशा ही हाथ लगती है। वह मिल, फैक्टरी, कारखाना या और किसी प्रकार का श्रम करके पटे भरता है। निर्धनता उनका स्थायी धन है। इसे औद्योगिकमहानगरीय सभ्यता और संस्कृति में उसे तो गंदी बस्तीयों में रहना पड़ता है। उसके पास इसके अतिरिक्त विकल्प की क्या है?

शिक्षा और जागरूकता का अभाव:

शिक्षा और जागरूकता के अभाव में गंदी बस्तियों के विकास में वृधि हुई है ।वे व्यक्ति जो निर्धनता के शिकार हैं, वे गंदी बस्तियों की गंदगी से भी अनभिज्ञ हैं। जहां सुविधाएं नाम को भी नहीं है और बीमारियों और सामाजिक बुराइयां असीमित हिं फिर भी यहां इसलिए आतें हैं क्योंकि उन्हें नाम मात्र का किराया देना पड़ता है। अशिक्षा के चलते भोजन के पौष्टिक तत्वों के

www.ignited.in

संरक्षण की विधि से लोग वाकिफ नहीं हैं। भोजन को तल कर खाने में उन्हें, इस बात का अंदाजा नहीं लगता है कि वे अपने ही हाथों से, जो कुछ उन्हें मिल सकता था, उसे भी नहीं ले रहें हैं। भोजन में पकाया पानी या माड़ आदि निकालकर, न जाने कितने पोषक तत्व वे स्वयं नष्ट कर देते हैं। शिक्षा और जागरूकता के अभाव में वे अपने ही हाथों से अपनी ही क्या, अपनी अगली पीढ़ी की भी हानि कर रहें हैं।

गतिशीलता में वृद्धि:

पहले व्यक्ति को अपनी जमीन और घर की ड्योढ़ी से अत्यधिक लगाव था ।वह किसी भी दशा में अपना गांव, क़स्बा छोड़ना नहीं चाहता था, किन्तु औद्योगिकक्रांति और आवगामन की सुविधाओं ने व्यक्ति को नगरों में काम खोजने और नौकरी करने के लिए उत्प्रेरित किया ।नित्य लाखों की संख्या में व्यक्ति एक गांव से एक नगर, एक नगर से दुसरे नगर और नगर से महानगर में काम की तलाश में जाता है ।इतने व्यक्तियों के रहने के स्थान कोई भी नगर, अबालक कैसे बना सकता है। अस्तु वे गंदी बस्तियों के शरण में जाते हैं। इस तरह गंदी बस्तियों का विकास निरन्तर होते जा रहा है।

शोषण की प्रवृति:

उत्पादन का महत्वपूर्ण अंग श्रमिक, मलिन बस्तियों में रहता है और मालिक वातानुकूलित बंगलों में। पूंजीवादी व्यवस्था की यह बुनियादी नीति है कि आप आदमी की रोजी-रोटी की परेशानियों में फसायें रखें। भूखा व्यक्ति अपने परिवार के पेट भरने की चिंता पहले करता है और कुछ बाद में। उसे जीने की इतनी सुविधाएं नहीं देते जिससे की वह दहाड़ने लगे और बाजू समेटकर अपने अधिकारों की मांग करने लगे। इसलिए उसे अभाव में जीने दो जिससे कि वह सदैव मालिकों का दास बनकर रहें। उसकी स्थायी नियत शोषण करना है, श्रमिकों को सुविधायें पहुंचना नहीं। अंततःनिर्धन शोषित श्रमिक रहने के लिए मलिन बस्तियों की शरण में ही जाता है।

सुरक्षा का स्थल है:-

गाँव छोड़कर ग्रामीण इसलिए भी नगर आ रहा है क्योंकि वहां सुरक्षा नाम की कोई चीज नहीं है। चोरी और डकैती सामान्य बात है। डकैतों का बढ़ता हुआ आतंक ग्रामीणों को गाँव छोड़ने के लिए मजबूर करता है। नगर में प्रशासक, पुलिस की व्यवस्था है जो उनके जान-माल की रक्षा करती है। इसलिए नगर की जनसंख्या में निरन्तर वृधि हो रही है और इसी के साथ गंदी बस्तियों में भी वृधि हो रही है।

ग्रामीण बेरोजगारी:-

भारतीय निर्धन गांव जहाँ वर्ष में कुछ ही महीने व्यक्ति को काम मिलता है और शेष माह वह बेरोजगारी के अभिशाप को भोगता है। ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है कि व्यक्ति को खाली समय में काम मिल सके ।इसलिए खेती के समय जो ग्रामीण व्यक्ति गाँव में उपलब्ध रहता है उसके पश्चात वह नगरों में काम करने आ जाता है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति रिक्शाचालक, ठेले खींचने वाले, खोमचा लगाने वाले या मिल में श्रमिक होते हैं अथवा कोई छोटा-मोटा कार्य करके अपनी जीविका अर्जित करते हैं। उनमें से अधिकांश व्यक्ति गंदी बस्तियों में रहते हैं। यह उनकी विवशता भी है।

नगर नियोजन का अभाव:

नगर में गंदी बस्तियों का यदि विकास हो रहा है तो इसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व नगरपालिका और सरकार पर है। यदि नगर का विअकास सुनियोजित और योजनाबद्ध ढंग से किया जाए तो गंदी बस्तियों का विकास शायद इस रूप में संभव न हो पता और ये नगर और मानवता के कलंक न बन सकते।

दुष्परिणाम:-

धरती के ये नरक सभ्य मानव जाति के लिए कलंक है। ये वे स्थान हैं जहाँ से असंख्य बुराइयां उत्पन्न होती हैं और सम्पूर्ण समाज को निगल जाती है। गंदी बस्तियों के दुष्परिणाम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझे जा सकते हैं:

यह वह स्थान है जहाँ कमरों में भीड़ रहती है और व्यक्ति एकांत के लिए व्याकुल रहता है। एक-एक कमरे में 10-15 व्यक्ति रहते हैं। इनमें कुछ भी गोपनीय नहीं रहता है। शीघ्र ही बच्चे बुरी आदतों को ग्रहण कर लेते हैं।

गन्दगी से परिपूर्ण यह स्थान बीमारियों के केंद्र हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मानव समाज नरक है। यहां सब कुछ प्रदूषित है। न यहां शुद्ध जल है न वायु और न वातावरण बच्चे इस नारकीय स्थान में रहतें हैं। यहां क्षय रोग सामान्य बात है। पेचिश, डायरिया तथा अनेक रोग यहां के बच्चों की विशेषता है।

बच्चे सामाजिक बुराइयों के बीच जन्म लेते हैं। इनके चारों तरफ असामाजिक वातावरण होता है। ये सहज ही बुराइयों को अपना लेते हैं और बचपन से ही ये सब करने लगते हैं जो अपराध है। इनके मध्यम से ही चरस, गांजा कच्ची शराब बेची जाती है। यह अनैतिक यौन संबधों की दलाली करते हैं। जुओं के अड्डों की देख-रेख करते हैं। इन्हें इसी रूप में प्रशिक्षित किया जाता है। आगे चलकर यह गंभीर अपराधी बनते हैं।

यहां व्यक्तित्व और परिवार का निर्माण होता। अधिकांश परिवार अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए उचित व अनुचित सभी प्रकार के कार्य करते हैं। शराब ,जुआ, अनैतिक यौन संबंध, चोरी आदि व्यक्ति को जहां नष्ट करते हैं वही पारिवारिक को भी विघटित करते हैं ।बच्चे इसे देखकर अपने पुवाजों की परंपरा का निर्वाह भविष्य में भी करते हैं।

ये वे स्थान हैं जहां सामाजिक आदर्श, मुल्य, नैतिकता, सहिष्णुता आदि के दर्शन होते हैं ।ये अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं। इन्हें खरीदकर इनसे कुछ भी कराया जा सकता है। अराजक तत्व यहां बनाये जाते हैं। ये वे व्यक्ति हैं जो समाज में गड़बड़ियाँ उत्पन्न करने के लिए ख़रीदे जाते हैं। इस प्रकार के कार्यों से समाज विघटित होता है।

गन्दी बस्तियों की समस्याओं के समाधान की योजनाएं:

गंदी बस्तियां अवांछित होते हुए भी नगरीय क्षेत्र के प्रमुख अंग बन गए है। गंदी बस्तियों के तीव्र प्रसार के कारण नगरों के नियोजित विकास में बाधा पंहुचती है। गरीबी गंदी बस्तियों की सार्वभौमिक विशेषता होती है। नगरों में रोजगार की उपलब्धता के कारण ग्रामीण प्रवास को प्रोत्साहन मिलता है। निम्न आर्थिक स्थिति के कारण प्रवासितो द्वारा नगर के रिक्त सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा कर आवास निर्मित कर लिए जाते है और गंदी बस्तियों का प्रसार होने लगता है। इस प्रवृत्ति ने गंदी बस्तियों को प्रोत्साहन दिया है। यह बस्तियां भौतिक दृष्टि से नगर को आवासीय बना देती है। सम्मानजनक जीवनयापन सुविधा के अभाव में जनसंख्या का बढ़ता हुआ संकेन्द्रण सामाजिक व नैतिक मोर्चे पर भी अमानवीय परिस्थितियों को जन्म देता है। गंदी बस्तियां केवल नगरों के लिए ही गंभीर नहीं है, वरन राष्ट्र के सर्वागीण विकास में भी बाधक है। अतः इस समस्या को हल करने के लिए व्यवस्थित नियोजन की आवश्यकता है,जिससे गंदी बस्तियों के समस्याओं का उचित निदान के साथ ही भविष्य में इनके वृद्वि को नियंत्रित किया जा सके। इस क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित की गई हैं। प्रमुख योजनायें निम्न प्रकार से है।:-

केन्द्र सरकार की योजनायें:

केन्द्र सरकार के द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देष के विकास एवं उन्नयन के लिए विभिन्न योजनायें संचालित की जा रही है। इन योजनाओं में आवास एवं गंदी बस्तियों की समस्याओं को हल करने के लिए अनेक प्रयास किए गए है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में गंदी बस्तियों के सुधार के लिए विषेष प्रयास किए गए है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में (1956) में “slum clearance and improvement scheme” का निर्माण किया गया, जिसके अंतर्गत 350रू. मासिक आय से कम आय वाले परिवारों के लिए स्वच्छ क्षेत्रों में आवास की व्यवस्था का प्रावधान था। इस योजनाकाल में गंदी बस्तियों के पर्यावरण सुधार के साथ ही वहां निवासरत अतिनिम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के लिए आवास निर्मित किए गए, जिसके अंतर्गत लगभग 80.3 करोड़ रूप्ये खर्च किए गए। 1969 में केन्द्र सरकार की यह योजना राज्य सरकारों को सौंप दी गई है। वर्ष 1972 से दिल्ली सहित देश के 10 वृहत नगरों के पर्यावरण सुधार के लिए योजना प्रारंभ की गई। इस योजना के अंतर्गत जलपूर्ति की सुविधा, जल निकास व्यवस्था, सामुदायिक शौचालय एवं स्नानगृह निर्माण, सड़क का निर्माण, मरम्मत एवं विद्युतीकरण का कार्य किया गया। पांचवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 3 लाख से अधिक जनसँख्या वाले नगरों तथा छठीं योजना में 1 लाख से अधिक जनसँख्या वाले नगरों को भी इस योजना में सम्मिलित किया गया। छठवीं पंचवर्षीय योजना में इस क्षेत्र में 151.45 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रावधान किया गया। विश्व बैंक से भी गंदी बस्तियों के पर्यावरण सुधार के लिए अनुदान प्रदान किया जाता है। वर्ष 1960 में झुग्गी हटाने की योजना लागू की गई, जिसके अंतर्गत शासकीय भूमि पर अवैध कब्जों को हटाकर अन्यत्र बसाने की योजना थी। यह योजना केवल दिल्ली नगर के लिए ही थी। सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90) में आवास योजनाओं पर 2458.27 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रावधान किया गया। सांतवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत ही 1989 में शहरी निर्धन बेरोजगारों के लिए नेहरू रोजगार योजना लागू की गई है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में नगरीय क्षेत्रों में निर्धनता के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए “urban basic services for the poor (UBSP)” योजना लागू की गई है। केन्द्र सरकार के द्वारा इस

www.ignited.in

योजना के लिए 8090 लाख रूपये राशि व्यय करने का प्रावधान है। नवमीं पंचवषी र्य योजना में "Envornment improvement in urban slums (EIUS)." योजना को उक्त प्राथमिक्ता दी गई है। प्रारंभिक योजनाओं में केन्द्र सरकार की एकीकृत योजनाएं गंदी बस्तियों के सुविधाओं एवं पर्यावरण सुधार के लिए लागू की गई है। 12 वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में 672.8 रुपये प्रतिमाह व शहरी क्षेत्रों में 859.6 रुपये प्रतिमाह के उपभोग व्यय को निर्धारित किया गया है।

निष्कर्ष:

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गरीबी की संस्कृति में पल रहे गंदी बस्तीवासी हालांकि कुछ माने में अपनी अज्ञानता, गरीबी या शिक्षा के आभाव में पोषाहार से सम्बंधित बहुत-सी-छोटी मोटी बातों की जानकारी नहीं रखते जिसके फलस्वरूप आगे चला कर उन्हें कुपोषण के दुष्परिणाम झेलने पड़ते हैं ।फिर भी यह निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि कुछ हद तक हमारे समाजिक मूल्य या परम्पराएँ इन्हे कुछ ऐसा करने को बाध्य करीत है जिसके कारण ये बहुत हद तक अपने बच्चों को एक स्वस्थ जीवन देने को मजबूर होते हैं ।परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति की अपनी सीमाएं उन्हें ऐसा करने को मजबूर करती है और चूँकि उनके अपने समाज में यही कभी सभी परिवारों की होती है जो उनके अपने सामाजिक परिवेश के अनुरूप, सामजिक मूल्यों में बदलाव को प्रभावित करती रहती है और समाजिक परिवर्तन का यह चक्र गंदी बस्तियों में रहने वाले परिवारों को अपने दायरे से नहीं निकलने देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. भारत में गंदी बस्तीयॉ एवं विकास, श्रीवास्तव नीरज 1994, जीवन पब्लिकेशन, आगरा
2. गंदी बस्तीयों की समस्याएं, दुबे संजय 2007, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली
3. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, रविन्द्रनाथ मुखर्जी 2000
4. आर. जोशी, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2013
5. आर. जोशी, पर्यावरण भूगोल , साहित्य ग्रन्थ अकादमी, आगरा 2013
6. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच एस शर्मा एवम प्रोफेसर आर एन मिश्रा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2013।
7. प्रतियोगिता दर्पण पत्रिका नवम्बर 2013
8. लिन्थ्रेन, एच.सी. (1973) कक्षा अध्यापन में शिक्षा मनोविज्ञान, भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
9. माथूर, ओ. पी. (2000) ए न्यू फॉर दी अर्बन पु अर स्लम्स फ्री सिटीज, नई दिल्ली: नेशनल इंस्टिट्युट ऑफ पबिलक फायनेन्स एण्ड पालिसी।
10. मंगल एस. के. (2009) जनरल सायकोलोजी, नई दिल्लीः स्टलिंग पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड।
11. अधिवास भूगोल, डॉ. यू. बी. सिंह, जवाहर पब्लिकेशन - डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
12. अधिवास भूगोल, डॉ. एस. डी. मौर्य, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
13. नगरीय भूगोल, डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल, मिनाक्षी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
14. नगरीय भूगोल, हरीश कुमार खत्री, कैलाश पुस्तक भवन, भोपाल, मध्यप्रदेश
15. नगरीय भूगोल, डॉ. ओ. पी. सिंह, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

Corresponding Author

Dr. Vijay Kumar Verma*

Lecturer, Department of Geography, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan